बिहार के अररिया जिले के युवक अमित की खाकपति से अरबपति बनने की कहानी बताती है कि अगर जज्बा हो तो किसी भी बुलंदी को छूना नामुमकिन नहीं है। अमित का मानना है कि हर इंसान को अपनी क्षमता के अनुसार समाज के लिए जरूर कुछ करना चाहिए।

मिसाल

फर्श से अर्श तक का सफर

मोती बाबू इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी

• निशा झा

बिहार के अररिया जिले के फारबिसगंज कस्बे से लगभग 25-30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मिरदौल गांव के लोग आज 20-25 साल पुराने अपने इतिहास को याद करना नहीं चाहते। तब स्थिति यह थी कि गांव पहुंचने के लिए घोड़ा ही एकमात्र सवारी होता था। गांव में न तो सड़क थी और न ही यातायात के लिए कोई वाहन थे, लेकिन इस गांव में आज महंगी गाड़ियां दौड़ रही हैं। और यह सब संभव हुआ है गांव के ही 33 वर्षीय एनआरआई युवक अमित कुमार दास के परिश्रम से। अमित ने यहां 120 करोड़ रुपए की लागत से मोती बाबू इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमबीआईटी) नाम से कॉलेज खोला। हर साल यहां 300 विद्यार्थियों को बी-टेक डिग्री के लिए दाखिला मिलेगा, जिसमें स्थानीय गरीब विद्यार्थियों को तरजीह दी जाएगी। अमित की इस पहल से बिहार के इन बहुत पिछड़े इलाकों को कई तरह के फायदे मिलने लगे हैं। एक ओर जहां सरकार ने गांव को सड़क से जोड़ दिया है, वहीं गांव में विकास की अन्य गतिविधियां भी शुरू हो गई हैं।

अमित की सफलता ने स्थानीय लोगों के बीच शिक्षा के महत्व को स्थापित किया है। गौरतलब है कि अररिया की गिनती देश के सबसे कम शिक्षित जिलों में होती है। मिरदौल जैसे अति पिछड़े गांव में अंतरराष्ट्रीय स्तर के कॉलेज खुलने की बात जितनी नाटकीय है, उससे कहीं ज्यादा रोमांचक है गरीब किसान के बेटे का खाकपति से अरबपति बनना।

अमित इंजीनियर बनना चाहते थे, लेकिन गरीबी के कारण उसका यह सपना साकार न हो सका मां-पिता आर्थिक जिम्मेदारी उठाने की स्थिति में नहीं थे। इसलिए पढ़ाई इंटरमीडिएट से आगे नहीं बढ़ सकी। 1998 में नौकरी की तलाश में गांव से दिल्ली आते वक्त उनकी जेब में महज 250 रुपए थे। दिल्ली में नौकरी मिल नहीं रही थी, इसलिए उन्होंने कम्प्यूटर के एक संस्थान में दाखिला ले लिया। अमित को कोर्स पूरा करने के बाद उसी संस्थान में इंस्ट्रक्टर की नौकरी मिल गई। उन्होंने कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग सीखी। जल्द ही उन्हें अहसास हो गया कि वह सॉफ्टवेयर बना सकते हैं। उन्होंने दिल्ली के भरतनगर इलाके के एक तंग कमरे में अपनी एक छोटी-सी सॉफ्टवेयर कंपनी खोल ली। उनके बनाए सॉफ्टवेयर बिकने लगे। 2006 के आसपास उन्होंने आईसॉफ्ट नाम से एक सॉफ्टवेयर कंपनी बनाई और ऑस्ट्रेलिया चले गए। ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में कंपनी का मुख्यालय बनाया। धीरे-धीरे इसके कार्यालय दुबई, लंदन, नई दिल्ली, पटना समेत कई शहरों में भी खुल गए और आज आईसॉफ्ट का सालाना कारोबार 150 करोड़ रुपए से ज्यादा है, जिसमें 250 से ज्यादा अधिकारी-कर्मचारी काम कर रहे हैं।

250
रुपए जेब में लेकर बिहार से दिल्ली पहुंचे थे अमित कुमार दास।

2006
में अपनी कंपनी आईसॉफ्ट नाम से खोली।

120
करोड़ की लागत से खोला अंतरराष्ट्रीय कॉलेज

अरबपति बनने के बाद भी नहीं भूले गांव को

अपने इलाके और राज्य के विकास के लिए उन्होंने मातृभूमि के नाम से एक योजना बनाई। इसके तहत शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में वे लगातार काम कर रहे हैं। गांव के पास के कस्बे फारबिसगंज में वे एक बड़ा अस्पताल खोलने वाले हैं। इसके अलावा अमित एक आवासीय विद्यालय भी शुरू करने जा रहे हैं। अमित कहते हैं, सफलता मिलने के बाद हम अपनी जड़ों को भूल जाते हैं। मेरा मानना है कि हर किसी को परिवार के साथ अपनी सामाजिक जिम्मेदारी भी निभानी चाहिए।